Name of Paper : दैनिक भास्कर राष्ट्रीय संस्करण

Published at : दिल्ली - फरीदाबाद

Dated : 26 JUN 2007

नशीले पदार्थों के दुरूपयोग और तस्करी के विरुद्ध अंतरराष्ट्रीय दिवस पर विशेष।

मर्ज बढ़ता ही गया ज्यों-ज्यों दवा की

एजेंसी. नई दिल्ली

अंतरराष्ट्रीय और राष्ट्रीय स्तर पर नशीली दवाओं के विरूद्ध चलाए गए अभियानों और कठोर कदमों के बाद भी नशीली दवाओं का दुरूपयोग और तस्करी थमने की बजाए नए रूपों में सामने आ रही है। आज भी तकरीबन 20 करोड़ लोग ऐसे हैं जो विभिन्न प्रकार की नशीली दवाओं के सेवन की चपेट में आ चुके हैं। इसमें सबसे अधिक संख्या गांजा और चरस का सेवन करने वालों की है जिनकी संख्या करीब 16 करोड़ 20 लाख तक पहुंच चुकी है। हर इनकी संख्या बढ़ती ही जा रही है। संयुक्त राष्ट्र के नशीले पदार्थ और अपराध कार्यालय (यूएनओडीसी) की ताजा रिपोर्ट के अनुसार हर साल की तरह इस बार भी दुनिया भर में 26 जून नशीले पदार्थों के तस्करी के खिलाफ अंतरराष्ट्रीय दिवस के रूप में मनाया जा रहा है।

यूएनओडीसी का नया नारा

यूएनओडीसी का इस बार का नारा है उसका थीम है 'क्या आपका जीवन नशीले पदार्थों से नियंत्रित होता है'। यह नारा तीन साल तक चलता रहेगा। वर्ष 2007 में नशीले पदार्थों के दुरूपयोग, वर्ष 2008 में नशीले पदार्थों की खेती और उत्पादन पर और वर्ष 2009 में नशीले पदार्थों की तस्करी के खिलाफ जोर दिया जाएगा। काफी प्रयासों के बाद भी दुनिया में नशीले पदार्थों का अवैध कारोबार खूब पनप रहा है। आज यह सलाना आज यह सालाना 400 अरब डॉलर से अधिक तक पहुंच गया है जो कुल अंतरराष्ट्रीय व्यापार का लगभग आठ प्रतिशत है। अमेरिका सहित सभी देश इससे रोकने में कड़े कदम उठा रहे हैं लेकिन सफलता नहीं मिल रही है।

पाकिस्तान से दिल्ली पहुंचती है नशीली दवा

नशीली दवाओं के तस्कर अफगानिस्तान से पाकिस्तान और फिर पंजाब होते हुए नशीली दवा दवाओं को किसी भी माध्यम दिल्ली लाते हैं और फिर यहां से यूरोप के देशों में सप्लाई करते हैं। संयुक्त राष्ट्र मादक पदार्थ नियंत्रण कार्यक्रम की रिपोर्ट के मुताबिक जिस हेरोइन का मूल्य हेरोइन का मूल्य यहां एक लाख प्रति किलो है यूरोपीय बाजार में उसे आसानी से एक करोड़ रुपए प्रति किलोग्राम मिल जाता है। सभी देशों में इसके खिलाफ कड़े कानून होने के बावजूद यह व्यापार लगातार फैलता ही जा रहा है। अमेरिकी ने दुनिया के 23 देशों को नशीली दवाओं के उत्पादन और पारगमन क्षेत्र के रूप में चिन्हित किया है उनमें भारत का नाम भी शामिल है।

गोल्डन ट्राएंगल और क्रिसेंट से बढ़ी तस्करी

रिपोर्ट के अनुसार विभिन्न एजेंसियों द्वारा अध्ययन से यह बात सामने आई है कि नशीले दवाओं का कारोबार करने वाले गोल्डन ट्राएंगल और गोल्डन क्रिसेंट देशों के बीच भारत के स्थित होने के कारण इसका नशीली दवाओं के आगमन में भरपूर इस्तेमाल किया जाता है। गोल्डन ट्राएंगल में बर्मा, लाओस और थाईलैंड और लोल्डन क्रिसेंट में अफगानिस्तान, पाकिस्तान और ईरान शामिल हैं।